जहाज मंदिर प्रेस विज्ञप्ति

नवप्रभात

लेखक– पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

चन्द्रप्रभ परमात्मा का स्तवन गा रहा था। आनंदघनजी म. ने इस स्तवन में परमात्मा के प्रति अपनी श्रद्धा का सागर उंडेल दिया है।

परमात्मा क्या मिले... जीवन का लक्ष्य मिल गया! जैसे किसी प्यासे को पानी मिला!

जैसे किसी अंधे को आंख मिली! जैसे किसी मूरत में प्राण आ गये!

अपने इन्हीं अहोभावों की अभिव्यक्ति उन्होंने स्तवन की आंकडी में की है।

आंकडी है–

सखि मने देखण दे, चन्द्रप्रभु मुख चन्द, सखि मने देखण दे!

इस आंकडी में स्तवन का पूरा निचोड आ गया है। इस मुखडे का अर्थ हृदय में उतर जाये और यह अर्थ मेरा अपना हो जाये... यह अर्थ मेरे रोम रोम से आने लग जाये... तो समझना साधना पूर्णता को प्राप्त हुई।

कौन आनंदघन को रोक रहा है... जो वे कहते हैं– मुझे देखने दे... मुझे दर्शन करने दे...!

कोई तो है जो बाधा बना है। कोई तो है जो उन्हें रोक रहा है! कौन हो सकता है वो!

हाँ! मन है जो उन्हें रोक रहा है।

तो फिर प्रश्न होगा– दर्शन करने वाला कौन है! दर्शन करने को उत्सुक कौन है!

तो उत्तर होगा– मन है जो परमात्मा को देखना चाहता है।

ओह! मैं तो मन को समझ ही नहीं पा रहा हूँ। रोकने वाला भी मन... चाहने वाला भी मन... । तो एक ही मन डबल रोल कैसे कर रहा है!

बिल्कुल ठीक कहा– मन डबल रोल कर रहा है। हर व्यक्ति का मन करता है। मन की इस लीला को समझने के लिये मन का विभाजन करना होगा। यों तो मन के लाखों प्रकार है। पर संक्षेप में समझना हो तो हमें मन के दो भेद करने होंगे। एक अच्छा मन, दूसरा बुरा मन! अच्छे और बुरे की व्याख्या में समस्त प्रकार के मन आ गये।

आनंदघन योगी का अच्छा मन अपने बुरे मन से कहता है। डांट कर नहीं, बल्कि प्रेम से! उसे सखा... दोस्त बना कर! क्योंकि दोस्त बनाये बिना वह आपका काम नहीं कर सकता। और उन्हें अपना काम करना है। परमात्मा से मिलना है पर क्या करें, वह बुरा मन बार बार बीच में आकर... नये नये प्रस्ताव रख कर बाधा बन जाता है। इस लिये उसे मना कर परमात्मा से मिलना चाहते हैं। अपने मन को मित्र बना कर ही उससे काम लिया जा सकता है। अपना मन मित्र बना कि सारी दुनिया अपनी हो जाती है। फिर परायेपन के लिये कोई अवकाश नहीं रह पाता।

जटाशंकर

लेखक– पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

जटाशंकर का दोस्त लम्बे समय बाद शहर में आया था। व्यापार आदि के कारण वह लगभग तीन साल तक बाहर रहा था। काम इतना ज्यादा था कि अपने मित्र से दूरसंचार पर वार्तालाप भी नहीं कर पाया था।

उसने जल्दी से आवश्यक कार्य निपटा कर मित्र के घर की ओर मुख किया। मित्र के घर पर पहुँचा तो पाया कि उसका मित्र घर पर नहीं है। उसका छोटा भाई वहीं था।

उसने छोटे भाई ने पूछा– भैया! मेरा दोस्त जटाशंकर दिखाई नहीं दे रहा। कहाँ है? क्या कर रहा है?

छोटे भाई ने जवाब दिया– कुछ दिन पहले दुकान खोली थी।

उसने पूछा– अच्छा किया। व्यापार होगा। दो पैसे की आय होगी तो बुढापे में काम आयेगी। पर वह है कहाँ!

सर! आप पूरी बात तो सुनिये।

उसने कहा– दुकान खोली थी। इस कारण वह जेल चला गया। अभी वहीं है।

– दुकान खोलने से जेल क्यों चला गया!

– अरे भाई! दुकान चाभी से नहीं, हथोडे से खोली थी, इसलिये।

ओह! चोरी की थी। फिर तो जेल जायेगा ही।

गलत काम का परिणाम तो भुगतना ही पडता है। कदाच यहाँ बच जाय पर कर्मराज के आगे कोई नहीं बच सकता। कर्मों का भुगतान तो करना ही होता है।

38. ऐसे थे मेरे गुरुदेव

वि. सं. 2018 की बात है। पूज्यश्री का विहार बाडमेर से चौहटन की ओर हो रहा था। बीच में राणी गांव में रूके थे। वहाँ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा करानी थी।

प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त पूज्यश्री ने ज्येष्ठ सुदि 13 का दिया था। भयंकर गर्मी थी। अष्टाह्निका महोत्सव के साथ परमात्मा सुमतिनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी।

प्रतिष्ठा से एक दिन पहले एक अजैन महिला पूज्यश्री के दर्शन करने आई थी। पूज्यश्री ने मारवाडी भाषा में बात की थी। उसने कहा– बापजी! बाकी सब तो लीला लेर है। पर बारिस कुनी। आप फरमावो– बारिस कदे वेला।

पूज्यश्री ने चिंतन किया। इस बाई को यह समझाना बडा मुश्किल काम है कि हम जैन साधु हैं। हमें इन सब बातों का कोई लेना देना नहीं है। यह सब कर्म बंधन का कारण है।

उस महिला ने कहा– आप एडो जोरदार भगवान रो जाप करो के अठे बारीस वे जावे!

पूज्य श्री ने कहा– बारिस किसी के हाथ में नहीं है। भगवान का नाम लेने से... धर्म करने से.. सब ठीक होता है।

पता नहीं, पूज्यश्री की बात उसे कितनी समझ में आई। पर उसे जो समझ में आया, वह उसकी प्रसन्नता के लिये पर्याप्त था। उसने समझा था कि भगवान का नाम जपने से बारिस आयेगी। उसने सोचा– हमारे लिये तो ये बापजी ही भगवान है। इन्हीं का नाम स्मरण करें।

और जैसे उस गांव में चमत्कार हुआ। बारिस के कोई लक्षण नहीं दिखाई दे रहे थे... न बादलों की अठखेलियां थी, न बिजली के चमकारे! पर अचानक जैसे वातावरण ने यू टर्न लिया। और प्रतिष्ठा के दिन जबरदस्त मूशलाधार बारिश हुई। जैसे लम्बे समय की धरती की प्यास बुझी।

दूसरे दिन वह महिला दौडी दौडी पूज्यश्री के पास पहुँची। उसने कहा– बापजी! मैंने कल आपसे बारिश मांगी थी। आज बारिश हो गई। आप वचन सिद्ध महापुरूष हो। में कतरी मूरख हूँ। मांगे मांगे ने बारिस मांगी। आज तो मूं आपसुं सोने की बरसात मांगती तो वो भी फल जावती।

यह पूज्य की वचन सिद्धि का प्रभाव था। राणी वाले आज भी इस घटना को भूले नहीं है।

कांकरिया गोत्र का इतिहास

लेखक– पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

कांकरिया गोत्र का उद्‌भव नवांगी वृत्तिकार खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म. के पट्‌टधर आचार्य जिनवल्लभसूरि के उपदेश से हुआ है।

वि. सं. 1142 का यह घटनाक्रम है। चित्तौड नगर के महाराणा के राजदरबार में भीमसिंह नामक सामंत पदवीधारी था। वह पडिहार राजपूत खेमटराव का पुत्र था। वह कांकरावत का निवासी था। उसे महाराणा की चाकरी करना पसंद न था। एक बार राजदरबार में किसी कारणवश सामंत भीमसिंह आक्रोश में आ गये। उनका स्वाभिमान जागा और वे अपने गांव चले गये।

महाराणा को यह उचित नहीं लगा। तुरंत सेवा में चले आने का हुकम जारी किया। पर सामंत भीमसिंह ने वहाँ जाना स्वीकार नहीं किया।

इस पर अत्यन्त क्रुद्ध होकर महाराणा से विशाल सेना भेजी और आदेश दिया कि सामंत भीमसिंह को कैसे भी करके बंदी बना कर मेरी सेवा में उपस्थित किया जाय।

गुप्तचरों से सेना के आगमन के समाचार ज्ञात कर भीमसिंह भयभीत हो उठा। अब मेरी रक्षा कौन करेगा! इस चिंता में उसे अनुचरों ने बताया कि अपने गांव में पिछले दो तीन दिनों से आचार्य जिनवल्लभसूरि नामक बडे आचार्य आये हुए हैं। योगी हैं, चमत्कारी ज्ञात होते हैं। उनकी साधना का तेज मुखमंडल पर चमक रहा है। आप उनकी सेवा में जाओ, कोई मार्ग निकलेगा।

भीमसिंह दौडा दौडा उपाश्रय में गया। आचार्य जिनवल्लभसूरि के चरणों में बैठकर अपनी विपदा का वर्णन किया। उसने कहा– गुरुदेव! मैं और मेरा स्वाभिमान आपकी शरण में हैं। मुझे बचाईये। आप जो भी आदेश देंगे, उसे मैं स्वीकार करूँगा।

ज्ञानी गुरुदेव आचार्यश्री ने उसका चेहरा देखा। ललाट की रेखाऐं पढी। भवितव्यता का रहस्य जाना। और कहा– तूं यदि मेरा आदेश मानता है तो मैं तेरी रक्षा का उपाय कर सकता हूँ।

सुनकर भीमसिंह की आँखों में चमक आ गई। तुरंत हाँ भरते हुए कहा– आप आदेश दीजिये। आप जो भी आदेश देंगे, मैं उसका अक्षरशः पालन करूँगा।

गुरुदेव ने कहा– सबसे पहले तो तुझे मांसाहार का सर्वथा त्याग करना होगा। सामंत की स्वीकृति पाकर गुरुदेव ने सप्त व्यसनों से मुक्त होने का नियम सुनाया। फिर कहा– तुझे वीतराग परमात्मा महावीर का अनुयायी होना है।

उसने सहर्ष स्वीकृति देते हुए कहा– भगवन्! आप मेरी रक्षा करो। मैं जैन श्रावक होने को तत्पर हूँ। मेरा पूरा परिवार आपकी आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य करेगा।

गुरुदेव ने कहा– ऐसे नहीं! मैं कहूँ और तुम मान लो। मैं तुम्हारी सुरक्षा के बदले तुम्हारा जैनत्व नहीं चाहता। अपितु मैं चाहता हूँ कि तुम पहले धर्म का स्वरूप समझो। और तुम्हें लगे कि परमात्मा का अहिंसा मूलक धर्म सत्य से ओतप्रोत है, तो फिर इसे स्वीकार करो।

गुरुदेव ने लगातार उसे धर्म की देशना दी। धर्म के सत्य स्वरूप को समझकर भीमसिंह प्रभावित हुआ। और उसने हृदय से जैन धर्म को स्वीकार करने का निर्णय किया।

गुरुदेव ने उससे कहा– महाराणा की सेना आने ही वाली है। तुम्हारे पास विशाल सैन्य नहीं है। इस बाह्य परिवेश से तो तुम्हारी हार स्पष्ट दिखती है। पर चिंता नहीं करना। जाओ और बाहर बिखरे कुछ कंकर उठा लाओ।

चांदी के एक थाल को कंकरों से भर दिया गया। पूर्णिमा की रात को चंद्रमा की चांदनी में गुरुदेव ने उन कंकरों का अभिमंत्रण करना प्रारंभ किया।

चार घंटे चली साधना के परिणाम स्वरूप वे कंकर दिव्य उफर्जा और शक्ति से परिपूर्ण हो गये। सामंत को बुला कर वह थाल उसे देते हुए कहा– जब सेना आ जावे। तब सेना के समक्ष इन कंकरों को नवकार महामंत्र गिनते हुए उछाल देना। फिर तुम इन कंकरों का चमत्कार देखना।

भीमसिंह ने उत्कंठा से कहा– भगवन्! क्या इन कंकरों से शत्रु सेना खत्म हो जायेगी!

गुरुदेव ने कहा– मैं जैन साधु हूँ। मेरा धर्म अहिंसा है। अहिंसा ही मेरे प्राण है। हिंसा की बात मेरे द्वारा कैसे हो सकती है!

सामंत ने कहा– हाँ भगवन्! आपकी सानिध्यता ने मुझे यह बोध तो दिया ही है।

गुरुदेव ने कहा– इन कंकरों के प्रभाव से सेना के सारे शस्त्र अस्त्र कुंठित हो जायेंगे। तलवार की धार चली जायेगी। तोपों के गोले नदारद हो जायेंगे। भालों की तीक्ष्णता पुष्पों की कोमलता में बदल जायेगी।

सामंत भीमसिंह चमत्कृत हो उठा। उसे रत्ती भर भी आशंका न थी। गुरुदेव पर अपार श्रद्धा का उद्भव हुआ था। उनकी निःस्पृहता और त्याग देख कर वह परम भक्त हो चुका था।

दूसरे ही दिन सेना गाँव के किनारे आ गयी। सेनापति ने हमले का आदेश दिया। सेना अपने शस्त्रों का प्रयोग करे, उससे पूर्व ही नवकार महामंत्र गिनकर भीमसिंह ने धडकते हृदय से कंकरों की बरसात सेना पर कर दी।

सेना के सारे शस्त्र अस्त्र बेकार हो गये। यह देख कर सेना घबरा उठी। सेनापति दौडता हुआ महाराणा के पास पहुँचा और सारी हकीकत बताई।

महाराणा ने यह चमत्कार सुना तो उसने समझौता करने में ही भलाई समझी। उसने तुरंत संदेश भेजा कि आप सहर्ष दरबार में पधारे। आपका सम्मान किया जायेगा। सामंत भीमसिंह दरबार में पहुँचा और महाराणा की ओर से सम्मान प्राप्त कर प्रसन्न हो उठा।

चित्तौड से वापस आकर अपने गाँव में बिराजमान आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि के चरणों में पहुँचा और निवेदन किया– मेरा संस्कार करें। मुझे जैन धर्म की शिक्षा और दीक्षा दें।

चूंकि कांकरावत नामक गांव में यह घटना घटी थी और कंकरों से विजय प्राप्त हुई थी। इस कारण गुरुदेव ने 'कांकरिया' गोत्र की स्थापना करते हुए उसके सिर पर वासक्षेप डाला। इस प्रकार कांकरिया गोत्र की स्थापना हुई। कांकरिया गोत्रीय परिवार पूरे भारत में फैले हुए हैं। इस गोत्र में कई आचार्य, साधु भगवंत हुए हैं। वर्तमान में मुनि मेहुलप्रभ आदि मुनि कांकरिया गोत्रीय है।

भोपालगढ जिसका पुराना नाम बडलू था, जहाँ चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि महाराज की दीक्षा हुई थी, वहाँ कांकरिया गोत्रीय घर बडी संख्या में है। भोपालगढ के ही मूल निवासी सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व श्री डी. आर. मेहता इसी गोत्र के हैं। भोपालगढ के कांकरिया गोत्रीय परिवार महाराष्ट्र प्रान्त में बडी संख्या में निवास करता है। इन परिवारों की यह विशेषता है कि समय के बदलाव के साथ वे भले अन्य किसी भी पंथ या संप्रदाय के अनुयायी हो गये हों, परन्तु उनके घरों में कुल देवता के रूप में दादा गुरुदेव के चरण पूजे जाते हैं।

गोत्र का निर्माण करने वाले गुरुदेव और उनकी परम्परा के प्रति उन परिवारों के पूर्वजों के कृतज्ञता भावों का यह प्रत्यक्ष उदाहरण है।

कांकरिया गोत्र के प्राचीनतम शिलालेख वि. सं. 1492 के प्राप्त होते हैं। इन शिलालेखों में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनभद्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराये जाने का उल्लेख है।

हमारे मुनि मेहुलप्रभ कांकरिया गोत्रीय है। इस गोत्र में और कितने ही साधुओं व साध्वियों ने संयम स्वीकार करके अपनी आत्मा का कल्याण किया है।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 ने ता. 4 को वडपलनी में परिकर प्रतिष्ठा करवा कर शाम को विहार किया। खिमेल निवासी श्री दीपकजी मेहता के घर रात्रि प्रवास कर प्रातः विहार कर केसरवाडी पधारे। वहाँ से शाम को विहार कर रेडहिल्स स्थानक में रूके। पूज्यश्री सिंधनूर की ओर विहार कर रहे हैं। लगभग 27 या 28 मई तक सिंधनूर पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 29 मई को कुमारी शिल्पा नाहर की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री का रायपुर की ओर विहार होगा। जहाँ चातुर्मास हेतु ता. 25 जुलाई को प्रवेश होगा।

चेन्नई में प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव : हुआ इतिहास का निर्माण

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि मुनि मण्डल एवं पू. छत्तीसगढ रत्ना महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. प्रियमित्राश्रीजी म. मधुस्मिताश्रीजी म. ठाणा 4, पू. प्रवर्तिनी श्री प्रेमश्रीजी म. तेजश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. पू.

साध्वी श्री प्रीतियशाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियश्रुतांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियमेघांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियविनयांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रियकृतांजनाश्रीजी म. ठाणा 8, पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री समत्वबोधिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री सत्वबोधिश्रीजी म. ठाणा 4, पू. महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री चारूलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री संयमलताश्रीजी म. ठाणा 8, पू. खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 आदि विशाल साधु साध्वी समुदाय की पावन सानिध्यता में चेन्नई महानगर में समदांगी बाजार स्थित श्री धर्मनाथ मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

श्री धर्मनाथ जिन मंदिर का इतिहास

प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की प्रेरणा से स्थापित श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल द्वारा निर्मित इस मंदिर की गृह मंदिर के रूप में प्रतिष्ठा 26 वर्ष पूर्व आचार्य पद्मसागरसूरिजी म. की निश्रा में हुई थी। गत वर्ष पदाधिकारियों ने निर्णय किया कि इस मंदिर का शास्त्र शुद्ध शिखरबद्ध मंदिर के रूप में जीर्णोद्धार किया जाये। इस लक्ष्य से ता. 27.1.2014 को भूमिपूजन एवं खात मुहूर्त्त किया गया। शिलान्यास विधान ता. 8.2.2014 को किया गया। निर्णय किया गया कि परमात्मा धर्मनाथ आदि तीनों प्रतिमाओं का उत्थापन नहीं करना है। बिना उत्थापन किये जीर्णोद्धार करना है। इसके लिये सोमपुरा व इंजिनियर की सलाह ली गई।

काम थोडा मुश्किल था। पर संकल्प का तीव्र बल था। बिरामी निवासी जी.जी. सोमपुरा ने पूरी जिम्मेदारी ली। इंजिनियरों से संपर्क किया गया। परिणाम स्वरूप मात्र 8 महिने में शिखरबद्ध तीन मंजिला मंदिर तैयार हो गया। इस मंदिर के निर्माण में उत्तम पाषाण प्रेषित करने वाले मकराणा के गोर मार्बल का भी योगदान रहा। जिन्होंने पाषाण–खण्डों की आपूर्ति तीव्र गति से लगातार की। प्रथम मंजिल पर परमात्मा धर्मनाथ आदि तीनों प्रतिमाओं का उत्थापन नहीं किया गया। मूल गंभारे का रूप दिया गया। परिकर की नई प्रतिष्ठा की गई।

नीचे भूतल पर नये गर्भगृह का निर्माण किया गया जिसमें धर्मनाथ परमात्मा की सपरिकर नई प्रतिमा एवं गर्भगृह के बाहर कोली मंडप में दो देवकुलिकाओं में गणधर श्री गौतमस्वामी एवं दादा जिनकुशलसूरि की प्रतिमा बिराजमान करने का निर्णय लिया गया।

प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ परिपूर्ण हो, इसके लिये यहॉ चातुर्मासार्थ बिराजमान पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. सा. की निश्रा में उनकी प्रेरणा से दादा गुरुदेव के इकतीसे का एक लाख चौपन हजार अखंड पाठ आयोजित किया गया। उनकी प्रेरणा से अखंड आयंबिल व अखंड अट्ठम तप का आयोजन भी हुआ।

श्री धर्मनाथ जिन मंदिर प्रतिष्ठा समारोह की भव्यता

हमारा संघ प्रतिष्ठा की विनंती लेकर पूज्यश्री की सेवा में इचलकरंजी पहुॅचा। पूज्यश्री से 26 अप्रेल का मुहूर्त्त प्राप्त कर संघ में खुशियों का वातावरण छा गया। कार्यकर्त्ता तैयारी में जुट गये।

पूज्यश्री इचलकरंजी से विहार कर हुबली में प्रतिष्ठा व दीक्षा, बल्लारी में दीक्षा, ईरोड, तिरूपुर, कोयम्बतूर, कन्याकुमारी आदि प्रतिष्ठाऐं संपन्न करवाकर चेन्नई महानगर पधारे। ता. 11 अप्रेल को वडपलनी में पूज्यश्री का महानगर प्रवेश संपन्न हुआ। जहॉ उनकी निश्रा में मुमुक्षु जया सेठिया एवं संयम सेठिया का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया। मुख्य सहयोगी बने संयम सेठिया की मासीजी मासाजी श्री कमलेशकुमारजी सौ. मालाजी शिशोदिया परिवार!

ता. 12 को पूज्यश्री विहार कर दादावाडी पधारे। बीच में पुरूषवाक्कम में श्री पुखराजजी मेघराजजी भंसाली के घर पगले किये। उनकी ओर से सामैया किया गया। संघ के नाश्ते का लाभ लिया गया। दादावाडी में वर्षीतप आराधना निमित्त श्रीमती सुन्दरबाई कन्हैयालालजी रांका परिवार की ओर से स्वामिवात्सल्य के साथ दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई। ता. 13 को पूज्यश्री दादावाडी बिराजे। ता. 14 को धोबी पेठ होते हुए ता. 15 अप्रेल को पूज्य गुरुवरों व साध्वी मंडल का प्रतिष्ठा दीक्षा निमित्त प्रवेश संपन्न हुआ। रिमझिम बारिश ने गर्मी की तपन को जैसे शान्त कर दिया। भव्य शोभायात्रा के साथ उत्साह व उल्लास का नजारा अलग ही था। नया मंदिर, गुजराती वाडी होते हुए धर्मनाथ मंदिर पधारे।

सभा में पूज्यश्री, पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. ने अपने प्रवचनों के माध यम से परमात्म–भक्ति एवं गुरु–महिमा का वर्णन किया। पू. साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. ने मधुर स्वरों में गीतिका के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

श्री मोहन मनोज गुलेच्छा, श्री श्रेणिक नाहर आदि ने भजन प्रस्तुत किये। प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव समिति के संयोजक श्री मुकेशजी गुलेच्छा ने सभा का संचालन किया।

ता. 16 से ता. 20 तक पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. के भक्तिभरे प्रवचनों का अनूठा वातावरण रहा। 'ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो' विषय पर पांच दिवसीय प्रवचन माला चली। बडी संख्या में लोगों ने प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया। धर्मनाथ मंदिर का भवन ठसाठस भरा रहता था।

ता. 19 अप्रेल से प्रतिष्ठा समारोह का श्रीगणेश किया गया। कुंभस्थापना, दीपस्थापना, जवारारोपण आदि मंगल विधान संपन्न किये गये। विधिकारक के रूप में 20वें वर्षीतप के तपस्वी श्री सुरेन्द्र भाई बैंगलोर से पधारे थे। ता. 20 को नंद्यावर्त पूजन आदि विधान किये गये।

ता. 21 को अक्षय तृतीया के दिन परमात्मा का च्यवन कल्याणक विधान संपन्न हुआ। जिन मंदिर में विधान तथा रत्नपुरी नगरी में कल्याणक महोत्सव मनाया गया। कार्यकत्ताओं के प्रयत्नों से एक विशाल भूखण्ड समीप ही प्राप्त हो गया था। वहीं पर रत्नपुरी नगर, जिनदत्तनगर, शालिभद्र नगर की रचना की गई थी। कल्याणक महोत्सव भी वहीं था व भोजनशाला भी वहीं थी। प्रतिदिन 20 हजार से अधिक लोगों की साधर्मिक भक्ति की गई। चेन्नई नगर में एक इतिहास बनने जा रहा था। आज यहॉ बिराजमान तीन साध्वीजी म. का दीक्षा दिवस है। पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.! उनके संयम की अनुमोदना अभिवंदना की गई। विशेष रूप से पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. की तो यह जन्मभूमि है। अपनी जन्म भूमि में दीक्षा दिवस मनाने का लाभ प्राप्त हो रहा है, इसकी भूरि भूरि अनुमोदना है।

ता. 22 को जन्म कल्याणक विधान व महोत्सव का अपना एक अलग ही नजारा था। परमात्मा के जन्म की बधाई देते हुए लोग भक्ति में झूम रहे थे। संगीतकार नरेन्द्र भाई वाणी गोता का अपना एक अलग अंदाज था।

56 दिक्कुमारिकाओं की तैयारी में पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म.सा. एवं पू. सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा. का पूरा योगदान रहा। कोकिल कंठी साध्वीजी म. के सुमधुर गीतों ने एक भक्ति मय वातावरण का निर्माण किया। उन्होंने इसके लिये बहुत परिश्रम किया।

ता. 23 को जन्म बधाई से समारोह का प्रारंभ हुआ। नामकरण, पाठशाला गमन, विवाह, मामेरा, राज्याभिषेक, नवलोकान्तिक देवों का आगमन व प्रार्थना तक का पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ता. 24 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। बडे बूढे लोगों का कहना रहा– चेन्नई के इतिहास में ऐसी विशाल लम्बी शोभायात्रा पहली बार देखने को मिली है। प्रतिदिन भयंकर ताप बरसाता सूरज भी जैसे आज धीमा हो गया था। बादलों ने गर्मी को एकदम कम कर दिया था। शाम को हुई तेज बारिश ने मौसम को खुशगवार बना दिया था।

ता. 25 को दीक्षा संपन्न हुई। 25 की रात अर्थात् 26 को सुबह ब्रह्म मुहूर्त्त से पूर्व अंजनशलाका का महाविध ाान किया गया। रात 3 बजे यह महाविधान प्रारंभ हुआ था। इसमें 800 से 1000 श्रद्धालु श्रावक श्राविकाओं ने

उपस्थित होकर एक कीर्तिमान स्थापित किया था। पूज्यश्री ने अंजनशलाका का गोपनीय विधान करने के पश्चात् तीर्थंकर के प्रतिनिधि के रूप में देशना प्रदान की। 108 अभिषेक के द्वारा निर्वाण कल्याणक मनाया गया।

ता. 26 को शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा धर्मनाथ, गणधर गौतमस्वामी, दादा जिनकुशलसूरि, भोमिया बाबा आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। अत्यन्त हर्षोल्लास व भक्ति भरे अनूठे वातावरण में परमात्मा को गादीनशीन किया गया। धर्मनाथ परमात्मा को बिराजमान का लाभ प्राप्त किया श्रीमती छोटाबाई कस्तुरचंदजी जेठमलजी गोपीचंदजी गुलेच्छा फलोदी वालों ने लिया। गणधर गौतमस्वामी को बिराजमान करने का लाभ श्रीमती मानाबाई लालचंदजी गुलेच्छा परिवार ने, दादा जिनकुशलसूरि को बिराजमान का लाभ चेतीदेवी सुगनचंदजी डोसी परिवार ने एवं भोमिया बाबा को बिराजमान का लाभ श्रीमती इचरजबाई चंपालालजी डोसी परिवार ने प्राप्त किया।

अमर ध्वजा व स्वर्ण कलश बिराजमान करने का नया चढावा न बुलवाकर पूर्व में गृहमंदिर की ध्वजा व स्वर्ण कलश के लाभार्थी परिवार क्रमश श्री ताराचंदजी विजयलालजी कोठारी व अभयकरणजी ज्ञानचंदजी कोठारी परिवार को प्रदान किया गया। जिसकी संघ ने भरपूर अनुमोदना की। प्रतिष्ठा के पश्चात् धर्म सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सोमपुरा, संगीतकार आदि का बहुमान किया गया। श्री जिनदत्तसूरि मंडल एवं प्रतिष्ठा महोत्सव समिति की ओर से पूज्य गुरुदेव श्री एवं साध्वीजी महाराज को कामली ओढाई गई। गुरुपूजन किया गया। दोपहर में अष्टोत्तरी शान्ति स्नात्र महापूजन पढाया गया। ता. 27 को द्वारोद्घाटन संपन्न हुआ। उसका लाभ तिरूपातूर निवासी श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड तथा उपर के मंदिर के द्वारोद्घाटन का लाभ श्रीमती छोटाबाई कस्तुरचंदजी जेठमलजी गोपीचंदजी गुलेच्छा फलोदी वालों ने लिया।

इस प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव को सफल बनाने में श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, श्री मुकेशजी गुलेच्छा, श्री बाबुलालजी गुलेच्छा, श्री रणजीतजी गुलेच्छा, श्री सुरेशजी लूणिया, श्री धर्मचंदजी गुलेच्छा, श्री राजेशजी श्रीश्रीमाल आदि महानुभावों का सक्रिय योगदान रहा।

गांधीधाम में श्री सीमंधरस्वामी जिनालय व दादावाडी का ध्वजा महोत्सव

गांधीधाम । प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के निश्रावर्ती प.पू. मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. एवं प.पू. मनीषप्रभसागरजी म.सा. तथा पार्श्वमणि तीर्थ उद्धारिका प.पू. सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री सीमंधरस्वामी जिनालय एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी का 12वां ध्वजा महोत्सव चतुर्विध संघ द्वारा बडे धूमधाम से वैशाख सुद 4 ता. 22.4.2015 को मनाया गया।

वैशाख सुद 5 को दादागुरुदेव का महापूजन बडे हर्षोल्लास से कराया गया। जिस पूजन का करीब 40 जोड़ों ने लाभ लिया। महापूजन का लाभ नाहटा परिवार–गांधीधाम ने लिया।

वैशाख सुद 6 को श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय एवं मुनिसुव्रत जिनालय की ध्वजा में भी पूज्य–साधू–साध्वीजी महाराजश्री ने निश्रा प्रदान की।

चेन्नई में भागवती दीक्षा का कीर्तिमान स्थापित हुआ

मूल नागोर निवासी श्री योगेशकुमारजी सेठिया की धर्मपत्नी श्रीमती जयादेवी सेठिया एवं उनके सुपुत्र श्री संयमकुमार सेठिया की भागवती दीक्षा ता. 25 अप्रेल 2015 को ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुई। ऐसी दीक्षा चेन्नई में पहली बार हुई। दीक्षा समारोह का प्रारंभ प्रातः 9 बजे से हुआ जो मध्याह्न 3.30 बजे तक चला। लगभग 15 से 20 हजार लोगों की विशाल उपस्थिति दीक्षा विधान के अंतिम समय तक बनी रही। यह अपने आप में एक कीर्तिमान था।

ता. 23 अप्रेल को मुमुक्षु संयम व जया देवी का डोराबंधन हुआ। धर्मनाथ मंदिर उपाश्रय पूरा ठसाठस भरा हुआ था। पूरा चेन्नई संघ मुमुक्षु संयम व जयादेवी का अभिनंदन कर रहा था। ता. 23 की रात को विदाई समारोह का संवेदना भरा कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुंबई से पधारे संजय भाउ ने संवेदना से परिपूर्ण सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ता. 24 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। ऐसी विशाल शोभायात्रा... हजारों लोगों की उपस्थिति... अनुशासित वातावरण... संभवतः चेन्नई नगर में पहली बार देखा गया, ऐसा बडे बूढे लोगों का कहना रहा।

पिछले दिनों से भीषण गर्मी का वातावरण था। लेकिन आज के वरघोडे में मेघराज का आगमन हुआ। और बादलों की छांव ने ठंडक पैदा कर दी। रात्रि को रिमझिम बारिश के खुशनुमा वातावरण में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। जोरदार बारिश हुई थी। सडकों पर पानी बह रहा था। इसके बावजूद पूरा पाण्डाल भर गया था। यह दीक्षा का अभिनंदन था। सभी के हृदय में अनुमोदना का भाव उमड रहा था। मुमुक्षु संयम के भाषण ने सभी की ऑखों को अश्रु बहाने के लिये मजबूर कर दिया।

ता. 25 अप्रेल के उस स्वर्णिम प्रभात ने बादलों की ओट से संयम का अभिनंदन किया। रत्नपुरी नगरी का पूरा पाण्डाल 8 बजे से ही ठसाठस भर गया था। बाहर विशाल मैदान में बडी स्क्रीन वाले टी.वी. लगाये गये थे, जिनमें दीक्षा विधान का सीधा प्रसारण हो रहा था।

परिवार जनों की ओर आज्ञा प्रदान करते ही दीक्षा विधि का प्रारंभ किया गया। रजोहरण प्रदान करने से पूर्व मुमुक्षु जयादेवी का भाषण हुआ। जयादेवी हृदय से बोल रही थी। अपने लाल को जिन शासन को समर्पित कर रही थी... स्वयं भी समर्पित होने जा रही थी। जयादेवी ने बताया– मेरे पुत्र का नाम इसके पापा ने रखा था। उनकी भावना थी कि पुत्र को संयम देना है। मुझे भी संयम लेना है। अपने पुत्र के बारे में जब बोल रही थी, तो मातृत्व छलक पडा। सबकी आंखें भीग गई।

संयम ने कहा– मुझ पर पूजनीया गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. के अनंत उपकार हैं। उन्होंने ही मुझे पढाया और इस योग्य बनाया। मां के उपकारों को मैं कभी भूल नहीं सकता। और जब अपने भाषण के बाद संयम ने अपनी परम उपकारी मां के चरणों का स्पर्श करके अपना सिर मां के पांवों से रगडा और पदधूलि अपने सिर से लगायी तो सारा पाण्डाल भीग उठा। सबकी आंखों से आंसू झरने लगे। माता पुत्र का यह अंतिम मिलन था।

उसके बाद शुभ मुहूर्त्त में जब रजोहरण प्रदान किया गया। तो बडी देर तक जयादेवी एवं संयम नृत्य करते रहे। उसके नृत्य से उसके अन्तर का आनंद अभिव्यक्त हो रहा था।

संयम वेश धारण करने के पश्चात् जब पाण्डाल में पुनः आगमन हुआ तो लोग धन्य हो उठे। और नूतन दीक्षित अमर रहे... के नारों से नभ गुंजाने लगे।

करेमि भंते का प्रत्याख्यान कराने के बाद नाम रखा गया– मुनि मलयप्रभसागर! वे पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. के शिष्य बने। जयादेवी का नाम रखा गया– साध्वी प्रियमुद्रांजनाश्रीजी! वे पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या बनी।

नूतन मुनि के धर्म माता पिता बनने का लाभ लिया– संघवी शा. तेजराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर निवासी ने। और नूतन साध्वी के धर्म माता पिता बनने का लाभ लिया– श्री सुपारसचंदजी मदनबाई बैद परिवार ने।

नामकरण का लाभ लिया क्रमशः श्री लक्ष्मीचंदजी बच्छावत– नागोर व श्री वीरेन्द्रमलजी आशिषकुमारजी मेहता परिवार ने!

संघ ने नूतन दीक्षित मुनि व साध्वीजी को वंदना की। उनसे पहला पहला धर्मलाभ श्रवण कर जीवन को ध न्य बनाया।

पूज्यश्री ने इस अवसर पर अपने प्रवचन में कहा– इस जगत में ऐसी माताऐं लाखों हैं जो अपने पुत्र के विवाह का सपना देखती है। पर ऐसी माताऐं तो करोडों में एक होती है, जो अपने लाल को परमात्मा महावीर के शासन को समर्पित करती है। जयादेवी की जितनी प्रशंसा और अनुमोदना की जाय, उतनी कम है। जयादेवी का एक ही सपना था– मेरे पुत्र को अशाश्वत सुख के लिये नहीं, शाश्वत सुख को प्राप्त करने का पुरूषार्थ करना है।

पूज्यश्री ने कहा– आज मेरे लिये अत्यन्त प्रसन्नता का अवसर है कि एक बाल मुमुक्षु संयम ग्रहण कर रहा है। इस समय यदि पू. माताजी म. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी का भी सानिध्य मिल जाता तो खुशियॉ चौगुनी हो जाती। वे इस समय छत्तीसगढ क्षेत्र में विहार कर रहे हैं।

इस अवसर पर उनके आत्म–संदेश को पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने पढकर सुनाया।

पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ने कहा– यह अत्यन्त आनंद का अवसर है कि एक मुनि की वृद्धि हो रही है। उन्होंने पूज्यश्री से आग्रह किया कि वे नूतन मुनि को अच्छी तरह पढा लिखा कर तैयार करे।

आज 25 ता. के सकल श्री संघ के स्वामिवात्सल्य का संपूर्ण लाभ दीक्षार्थी परिवार मुमुक्षु संयम के नानाजी श्री बस्तीचंदजी मामाजी श्री महिपालजी कानूगो परिवार द्वारा लिया गया। उनका भावभीना बहुमान अभिनंदन किया गया।

'दादावाडी दर्शनम्' ग्रन्थ का विमोचन हुआ

ता. 25 अप्रेल को भागवती दीक्षा समारोह में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी समुदाय की पावन सानिध्यता में **दादावाडी दर्शनम्** ग्रन्थ का विमोचन संपन्न हुआ। विमोचन का लाभ श्री समरथमलजी सोनाजी रांका परिवार के भागचंदजी उत्तमचंदजी भूपेश रांका परिवार गोल उम्मेदाबाद वालों ने लिया।

इस ग्रन्थ में तमिलनाडु, कर्णाटक, केरल, आन्ध्र प्रदेश व महाराष्ट्र प्रान्त की समस्त दादावाडियों का पूरा सचित्र इतिहास प्रकाशित किया गया है। यह प्रोजेक्ट श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मंदिर द्वारा सन् 2007 में प्रारंभ किया गया था। इस कार्य में श्री कान्तिलालजी रांका, श्री भंवरलालजी संखलेचा का बहुत योगदान रहा। कैलाश बी. संखलेचा ने इस प्रकाशन के लिये पूरी मेहनत की।

इस ग्रन्थ का लेखन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. व साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. द्वारा किया गया है। इसकी इतिहास सामग्री एकत्र करने में नवकार प्रिण्टर्स के श्री नीलेशजी जैन, भूपतजी चौपडा पचपदरा वालों ने मेहनत की थी।

वडपलनी में परिकर प्रतिष्ठा संपन्न

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा एवं पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विराग–विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में वडपलनी श्री संभवनाथ मंदिर में उफपर तल पर शिखर में बने मंदिर में परिकर की प्रतिष्ठा संपन्न हुई

प्रतिष्ठा का लाभ श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टाटिया परिवार तिवरी वालों ने लिया। नौकारसी का लाभ श्री वीरेन्द्रमलजी आशिषकुमारजी कोचर मेहता परिवार जैतारण वालों ने लिया।

प्रतिष्ठा के लिये पूज्यश्री ने चूले से विहार कर दादावाडी होते हुए ता. 4 को प्रातः वडपलनी पधारे। पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् विधि विधान के साथ प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

चेन्नई में भंसालीजी के घर पदार्पण

पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. का सांसारिक परिवार चेन्नई के इसी साहुकार पेठ में रहता है। जिनकी दीक्षा संपन्न हुए 30 वर्ष पूर्ण हुए हैं, दीक्षा के बाद पहली बार अपनी मातृभूमि में पधारे हैं। उनके सांसारिक घर श्री मन्नुभाई भंसाली एवं श्री भूपेशजी भंसाली के घर आंगन चतुर्विध संघ के साथ पूज्यश्री का पदार्पण हुआ।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा– जीवन धर्म के लिये है। धन के आने से सुख मिलेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। परन्तु धर्म के आने से जीवन सुखमय बन ही जायेगा, इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह नहीं है। अपने जीवन को धर्ममय बनाने का पुरूषार्थ करना चाहिये।

आपका कुल भाग्यशाली है। जिस घर में संयमी आत्मा का जन्म होता है। गौतमस्वामी के रास में विनयप्रभ उपाध्याय फरमाते हैं– धन माता जिणे उयरे धरियो, धन्य पिता जिणे कुल अवतरियो, धन्य सुगुरू जिणे दिक्खियो ए।

आपके घर से एक नहीं, अपितु चार चार संयमी आत्माओं ने जन्म लेकर दीक्षा लेकर अपनी आत्मा का कल्याण किया है व कर रहे हैं। खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. विशालप्रभाश्रीजी म. उनकी माताजी श्री वीरप्रभाश्रीजी म. एवं विश्वज्योतिश्रीजी म.! इन चार रत्नों को जन्म देने वाला यह भंसाली परिवार निश्चित ही भाग्यशाली है। भंसाली परिवार की ओर से गुरु पूजन किया गया। तत्पश्चात् सकल संघ के नाश्ते का लाभ लिया गया।

'श्राद्ध मणि' पुस्तक का विमोचन हुआ

पूजनीया गणरत्ना साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी तपोरत्ना वर्धमान तपाराधिका श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. द्वारा लिखित श्राद्ध मणि पुस्तक का विमोचन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, संघवी श्री विजयराजजी डोसी, हीरालालजी मुसरफ, कान्तिलालजी मुकीम, सुनीलजी चौरडिया आदि द्वारा किया गया।

इस पुस्तक में श्रावक जीवन के कर्त्तव्यों का विशेष रूप से विवेचन किया गया है। इस पुस्तक पर ओपन बुक एक्झाम का भी आयोजन किया गया है। श्रावक जीवन की मर्यादा समझाने वाला यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है।

चेन्नई में वर्षीतप पारणा संपन्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियविनयांजनाश्रीजी म.सा. के लगातार दो वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया वैशाख सुदि 3 ता. 21 अप्रेल 2015 को अत्यन्त हर्ष व उल्लास के साथ चेन्नई नगर के चूले उपनगर में संपन्न हुआ।

पूजनीया तपस्वी साध्वीजी म. की यह जन्मभूमि है। पारणे का संपूर्ण लाभ उनके सांसारिक परिवार श्री मदनचंदजी बरडिया परिवार द्वारा लिया गया।

इस उपलक्ष्य में दो दिवसीय भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। ता. 20 को तप वंदनावली का कार्यक्रम रखा गया, साथ ही भक्तामर महापूजन पढाया गया। ता. 21 को प्रातः चैत्यपरिपाटी का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए पूज्य उपाध्याय श्री ने कहा– परमात्मा आदिनाथ प्रभु से चली यह परम्परा कर्मक्षय का निमित्त है। एक दिन का उपवास भी मुश्किल से होता है। तो लगातार दो वर्षों तक निरन्तर तप करना, भूरि भूरि अनुमोदना का कारण है। पूज्यश्री ने कहा– पारणा इक्षु रस से इसलिये कराया जाता है, क्योंकि यही एक ऐसा फल है, जो नीचे से उपर तक मीठा है। ऐसा दूसरा कोई फल नहीं है, जिसका पेड मीठा हो।

शूले चेन्नई में भागवती दीक्षा संपन्न

चेन्नई महानगर के शूले उपनगर में कुमारी ममता बरडिया की भागवती दीक्षा ता. 2 मई 2015 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में अत्यन्त उत्साह व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस दीक्षा महोत्सव निमित्त ता. 28 अप्रेल 2015 को पूज्य गुरु भगवंतों का नगर प्रवेश कराया गया। ता. 30 अप्रेल को मुमुक्षु का डोरा बंधन हुआ। तथा संयम उपकरण वंदनावली का आयोजन किया गया। वंदनावली कार्यक्रम का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी महाराज ने किया। संयम के उपकरणों की विवेचना स्व रचित पद्यों के साथ की। साढे नौ बजे प्रारंभ यह समारोह बारह बजे तक चला। मालू भवन का विशाल हॉल ठसाठस भरा था। कार्यक्रम इतना वैराग्य रस परिपूर्ण था कि एक भी व्यक्ति उठा तक नहीं।

ता. 1 मई को वर्षीदान का वरघोडा निकाला गया। वरघोडे के बाद अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें सभी साधु साध्वीजी महाराज के प्रवचन हुए। पू. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विराग–विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ने अपने भाव व्यक्त करते हुए मुमुक्षु ममता को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर नूतन दीक्षित बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने प्रवचन देकर सबको चकित कर दिया। पूरा हॉल अनुमोदना के भावों से गूंजने लगा।

ता. 2 मई को दीक्षा समारोह में अपार भीड थी। तीन चार अन्य स्थानों पर बडी स्क्रीन लगा कर सीधा प्रसारण करवाया गया। नूतन साध्वीजी म. का नाम साध्वी श्री प्रियमंत्रांजनाश्रीजी म. रखा गया। वे पूज्य गणरत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या बनी। इस अवसर पर शाजापुर से डॉ. सागरमलजी जैन, मुंबई से श्री हरखचंदजी गडा आदि विशिष्ट महानुभाव पधारे।

भीलवाडा में दादा मेला का आयोजन होगा

पूजनीया साध्वी श्री राजेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विजयेन्द्रश्रीजी म. की कृपापात्र पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से उनकी निश्रा में भीलवाडा में ता. 17 व 18 मई को दो दिवसीय दादा गुरुदेव जिनकुशलसूरि दादा मेले का आयोजन होने जा रहा है। मेले का आयोजन श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री दादा गुरुदेव मित्र मंडल भीलवाडा द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

इस मेले में राजस्थान के गृह मंत्री श्री गुलाबचंदजी कटारिया, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सचिन पायलट आदि विशिष्ट व्यक्तित्व उपस्थित होंगे। मेले के अन्तर्गत विशाल प्रवचन सभा का आयोजन होगा। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी। अठारह अभिषेक का भी आयोजन होगा।

भजनों की सी. डी. का विमोचन हुआ

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा .की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया कोकिल कण्ठी साध्वी श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा. द्वारा गाये गये विशिष्ट भजनों की सीडी का विमोचन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा द्वारा किया गया। इस सीडी में 48 भजन गाये गये हैं। जिन्हें श्रवण कर जीवन धन्य होता है।

बालाघाट में वर्षीतप आराधकों का अभिनंदन हुआ

बालाघाट श्री संघ के परम सौभाग्य से प्रवर्तिनी प.पू. प्रमोदश्रीजी म. सा. की विदुषी शिष्या साध्वी रत्ना प. पू. डॉ विद्युत्प्रभाश्रीजी म. सा. का बालाघाट आगमन हुआ। प. पू. म.सा. की पावन निश्रा में 20 अप्रैल 15 को वर्षीतप के तपस्वी श्री अभय सेठिया, सौ मंजु अभय सेठिया, सौ. इंदुदेवी शांतिलाल सिंघी एवं सौ. सरोजदेवी रमेशचंद्र कोचर का अभिनंदन किया गया। प. पू. म.सा. ने वर्षीतप की महिमा का वर्णन करते हुये कहा कि विरले ही भाग्यशालियों को इस महान तप से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त होता हैं। वर्षीतप के सभी तपस्वियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुये उनके मंगलमय जीवन की कामना की।

अभिनंदन कार्यक्रम के पश्चात् प.पू. म. सा. की निश्रा में श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी में श्रीमती कमलादेवी मानकचंद बाफना परिवार द्वारा दादा श्री जिनकुशलसूरिजी को चाँदी की मनमोहक अंगिया चढ़ाई गई।

21 अप्रैल को अक्षय तृतीया के मंगल दिवस पर पार्श्वनाथ भवन मे विशाल धर्मसभा के संबोध्ति करते हुये प.

पू. म.सा. ने तप कहा महत्व बताते हुये कहा कि कर्मो की निर्जरा हेतु तप अति आवश्यक हैं, तप के द्वारा ही भगवान महावीर ने कर्मो का क्षय कर केवल ज्ञान प्राप्त किया। इस अवसर पर रायपुर, दुर्ग लालबर्रा, वारासिवनी, गोंडिया एवं अन्य अनेक स्थानों से श्री संघो का आगमन हुआ इसके पूर्व तपस्वियों की भव्य शोभायत्रा भी निकली गई।

अजय लूनिया
बालाघाट

बालाघाट में महावीर जन्म कल्याणक मनाया

कैवल्यधाम तीर्थ रायपुर ;छतीसगढद्ध से विहार कर 29 मार्च को प. पू. बहिन म. सा. प्रखर व्याख्यात्री डॉ. विद्युत्प्रभा

श्रीजी म. सा. ठाणा 4 का प्रथम बार म. पू. की ध्न्य ध्रा बालाघाट में आगमन हुआ।

पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर, मंदिर ट्रस्ट के सदस्य अजय लुनिया ने बताया कि सकल जैन श्री संघ की आग्रह भरी विनती को स्वीकार करते हुये प्रभु महावीर जन्म कल्याण्क तक आपने बालाघाट में ही स्थिरता रहने की सहर्ष स्वीक्ति प्रदान की जिसमें निश्रा में परमात्मा का जन्मकल्याणक बड़े ही आनंद एवं उल्लासमय वातावरण में भक्तिभाव पूर्वक मनाया गया। संत निवास दिगम्बर जैन महावीर भवन में सकल जैन समाज की उपस्थिती में आपने म. के जीवनचरित्र को एक अनूठे रूप में प्रस्तुत किया।

आपने ओजस्वी शैली में कहा कि भगवान महावीर ने प्रतिकूल वातावरण की कोई परवाह न करते हुये साहस के साथ अपने सिद्धान्तों को जनमानस के बीच रखा और हिंसा को नकारते हुये द्ढतापूर्वक अहिंसा का प्रचार किया। जन्म के बाद मेरु पर्वत पर जन्माभिषेक के समय इन्द्र को हुई शंका के निवारण के लिये बालवय में तीर्थंकर की असीम शक्ति का प्रदर्शन और उन्हीं अनंतबलशाली तीर्थकर प्रभु द्वारा अपनी यौवन अवस्था एवं साधनाकाल में समर्पण, करूणा दया एवं क्षमा का दर्शन का सुन्दर विवेचन अनूठी एवं कल्पनाशील सोच से करते हुये प्रभु के जीवन चरित्र की विशेष–विशेष घटनाओं को अपनी ओजस्वीवाणी में सकल जैन समाज के सन्मुख प्रस्तुत किया जिसमें आपके चिंतन की गुरूता एवं वाणी की विलक्षणता के दर्शन सबने किये।

प्रभु महावीर का माता–पिता के प्रति समर्पण एवं प्रभु आदिनाथ का माता मरूदेवी को छोड़कर संयम अंगीकार करने के निर्णय के तुलनात्मक अध्ययन को उन्होंने वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुये आज की युवापीढी को माता पिता के प्रति अपने कर्तव्यों को जागरुक करने का प्रयास किया। कदम–कदम पर प्रभु महावीर द्वारा किये गये औचित्य के पालन कि सिद्धान्त को अनेक प्रसंगों के माध्यम से प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमुदाय को नया चिंतन दिया।

प्रवचन के पश्चात सकल जैन समाज के तत्वावधान में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसमें भी आपने अपनी सानिध्यता प्रदान कर शोभायात्रा को ऐतिहासिक बना दिया।

वारा सिवनी, कंटगी सिवनी एवं लालबर्रा आदि क्षेत्रो में भी धर्मप्रभावना के लक्ष्य को लेकर आपने वारा सिवनी की ओर विहार करते समय मध्य प्रदेश शासन के कृषि एवं किसान कल्याणमंत्री श्री गौरीशंकर बिसेन एवं जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमति रेखा बिसेन के आग्रह हो स्वीकार कर अल्प समय के लिये रूकते हुये एक कथानक के माध्यम से उन्हें जनता की सेवा एवं उनकी समस्याओं के निवारण हेतु सतत प्रयत्नशील रहने का संदेश दिया एवं उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

वारासिवनी, कंटगी, सिवनी एवं लालबर्रा आदि क्षेत्रों में विचारता कर अपूर्व ध्र्म प्रभावना करतें हुये अक्षय तृतीया के अवसर पर वर्षीतप आराध्को को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हेतु पुनः आपका बालाघाट आगमन हुआ जहाँ आपकी पावन निश्रा में पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट द्वारा वर्षीतप आराध्कों का अभिनंदन किया गया।

अजय लूनिया
बालाघाट

क्षेत्र स्पर्शना करने की भावना से पूज्या गुरूवर्या बहिन म. श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म. सा. साध्वी श्री प्रज्ञांजना श्री जी साध्वी नीतिप्रज्ञा श्री जी एवं साध्वी श्री विभांजना श्री जी ने महावीर जयंति बालाघाट में संपन्न कर उसी दिन वारासिवनी की ओर विहार किया।

प. पू. साध्वीजी श्री प्रियंकरा श्री जी म. सा. ने स्वागत अभिनंदन करते हुए प्रवचन में कहा– आज अत्यंत आनंद का विषय हैं। पू. बहिन म. सा. से मिलकर प्रसन्नता हुई। वर्षों पूर्व की स्मृतियाँ ताजी हो गयी हैं। पू. गुरूवर्या महत्तरापद विभूषिता श्री मनोहर श्री जी म. सा. की सान्निध्यता में ही आपसे तीन चार बार मिलना हुआ पर उसके बाद तीन दशक के बाद आज पुनः मिले हैं।

पू. बहिन म. ने गुरू परम्परा का विशिष्ट शैली में वर्णन करते हुए कहा– विगत दो चार वर्ष में लगभग पूरा मनोहर मंडल मिल गया है। मनोहर मण्डल की सरलता देखकर मैं अभिभूत हूँ। हमारा जीवन प्रेममय है। बिना प्रेम मनुष्य का जीवन व्यर्थ हैं। धरती पर एक दाना बोते हैं, बदले में वह दानों से भरी बालियाँ हमें देती हैं। संबंधों की धरती परस्पर मिलने से ही उर्वर बनती है। मनुष्य को मात्र परिवार के छोटे से घेरे में ही नहीं रहना चाहिये। जितना संभव हो अपना हृदय इतना बड़ा करना चाहिये कि पूरी सृष्टि उसमें आ सके।

कई बार हम पशु पक्षी से प्रेम कर लेते हैं पर अपने निकट के लोगों से दूरी बना लेते हैं। जीवन का आनंद प्राप्त करना हो तो अपने भावों का भरपूर विस्तार करो। संबंधों का यह जगत सरल नहीं हैं। इस पथ पर वीरपुरूष ही चल सकता है।

साध्वी श्री प्रियंकरा श्री जी म. आदि सभी से मिलकर खूब आनंद हुआ। वारासिवनी संघ द्वारा स्वागत करते हुए श्री विनोदजी संचेती ने कहा– हमारे संघ का सौभाग्य हैं कि आपने इस धरती पर पर्दापण किया। आपका सान्निध य हमें लम्बा मिलना चाहिये। वारासिवनी प्रवेश से पूर्व स्थानीय सांसद श्री बोधसिंह भगत ने दर्शन किये।

पूज्यवर्या वहाँ तीन दिन बिराजे। दुर्ग संघ ने बड़ी संख्या में पहुॅचकर डॉ. साध्वीजी श्री नीलांजना श्री जी के चातुर्मास हेतु भाव–भरी विनंति की 15 मई को विहार कर गुरूवर्या श्री वारासिवनी की ही नहीं पूरे क्षेत्र की विशिष्ट गौशाला में पहुॅचे।

श्री विनोदजी ने गुरूवर्या श्री को जानकारी देते हुए कहा– प्राणीमित्र श्री कुमारपाल भाई के सान्निध्य ने ही हमें जीवदया के कार्य से जोड़ा। इस गौशाला की व्यवस्था में आज तक करोड़ों रूपये खर्च हुए हैं। क्षेत्र की जनता भरपूर सहयोग करती है। हमें जब भी पता चलता हैं कि इस क्षेत्र के निकट से कोई गाड़ी गोधन ले जा रही हैं, हम छापा मारकर उन्हें बचाते हैं और यहाँ ले आते हैं। हमारे इस छापे की कारवाई से क्रोधित होकर एक बार कसाइयों ने हमें धोखे से जंगल में बुलाया। जब उनके धोखे का पता चला तब अन्य सारे युवक तो इधर उधर हो गये पर एक बच्चा उनके हाथ में आ गया। उन्होंने उसकी जो पिटायी की, उससे उसका माथा फट गया। हम उसे नागपुर लेकर गये। दो बार उसके सिर का ऑप्रेशन हुआ। आप यह समझें कि उसे नया जीवन मिला हैं।

इस गौशाला में हजारों कबुतर हैं। सैकड़ों खरगोश हैं। इन सभी के लिये व्यवस्थित साधन बनाये गये हैं। पूज्याश्री ने कहा– मैंने इस गौशाला का भ्रमण करते हुए देखा– कितनी स्वच्छता और कितना पवित्र वातावरण है। चारों और शान्त और नैसर्गिक हवा।

वहाँ से गुरूवर्या श्री कटंगी पधारे। चूंकि समय की अल्पता थी अतः दो ही प्रवचन वहाँ हो पाये। वहॉ से विहार कर पूज्याश्री सिवनी पधारे, जहॉ चार दिन बिराजे! चारों दिन प्रवचन सत्संग एवं स्वाध्याय का स्थानीय संघ ने पूरा लाभ लिया। पूज्या श्री का स्वागत करते हुए संघ अध्यक्ष श्री धर्मचिंदजी भूरा, संघमंत्री श्री संजय जी मालू ने पूज्या श्री की सरलता एवं विद्वता की व्याख्या करते हुए सिवनी नगर पधरने पर आभार व्यक्त किया। प्रगति महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया!

सिवनी संघ की श्रद्धाभक्ति का उल्लेख करते हुए पूज्या श्री ने कहा– स्थानीय संघ ने जिस प्रकार की विहार में वैयावच्च की है, ऐसी प्रायः अन्यत्र दुर्लभ है। आज के इस मशीनरी युग में लोग पैदल चलना ही भूल गये हैं। ऐसे समय में लगातार हमारे साथ चलकर सिवनी संघ के श्रद्धालु युवकों ने रिकॉर्ड बनाया हैं।

सिवनी से भावभरी विदायी लेकर गुरूवर्या श्री लालबर्रा पधरे। वहाँ पर आप श्री का दो दिन का प्रवास रहा। संघ के वरिष्ठ श्रावक श्री विजयजी संचेती ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं सुश्राविका श्रीमती सरलादेवी गुलेच्छा ने गुरू महिमा की गीतिका प्रस्तुत की! लालबर्रा से अक्षय तृतीया के प्रसंग पर गुरूवर्या श्री बालाघाट पधारे!

बालाघाट में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम संपन्न कर पूज्या श्री गोंदिया पधारे। वहाँ वैशाख सुदि 6 को दादावाड़ी की ध्वजा कार्यक्रम को अपनी निश्रा प्रदान की। संघ अध्यक्ष श्री पंकज चौपड़ा ने गुरूजनों का स्वागत करते हुए उन्हें अधिक स्थिरता हेतु निवेदन किया परन्तु सामुदायिक व्यवस्थाओं का जिक्र करते हुए पूज्या श्री ने अपनी असमर्थता प्रकट की। राजनांदगॉव, दुर्ग होते हुए पूज्यवर्या का 7 मई तक रायपुर पधारने की संभावना है।

बिजयनगर पार्श्व भैरव मंदिर चुनाव संपन्न

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर ट्रस्ट की बैठक ता. 4 मई को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष श्री कैलाशचंदजी संचेती ने की। संस्थान का कार्यकाल पूरा होने से विधान के अनुसार सर्वसम्मति से चुनाव संपन्न कराये गये। जिसमें योगेन्द्रराजजी सिंघवी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष बने श्री राकेशजी सांखला! मंत्री पवनजी बोरदिया, कोषाध्यक्ष पुखराजजी डांगी, उपमंत्री महावीरजी कोठारी चुने गये।

इस संस्थान के अन्तर्गत पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर का कार्य चल रहा है।

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य नयज्ञसागरजी म. आगोलाई में प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ पर आयोजित त्रिदिवसीय भक्ति समारोह में अपनी निश्रा प्रदान कर जोधपुर पधारे। कुछ दिन वहाँ बिराजकर विहार कर वैशाख सुदि 15 सोमवार को ब्रह्मसर पधार गये हैं। वे कुछ दिन यहाँ बिराजेंगे।

0 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. गांधीधाम से विहार कर ता. 4 मई को शंखेश्वर पधार गये हैं। जहाँ उनकी निश्रा में तीन दीक्षाऐं संपन्न होगी। बाडमेर निवासी मुमुक्षु सुश्री मीना छाजेड एवं मुमुक्षु श्रीमती गीता बोथरा की भागवती दीक्षा 28 मई 2015 को तथा पाली निवासी मुमुक्षु भाविका लोढा की 7 जून 2015 को होगी।

0 पू. प्रवर्तिनी श्री कीर्त्तिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 सूरत बिराज रहे हैं।

0 पूज्य पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 10 ने चेन्नई से सिंधनूर की ओर विहार किया है। वे रेनीगुंटा, कडप्पा, गूती होते हुए सिंधनूर पधारेंगे। जहाँ उनकी सानिध्यता में कुमारी शिल्पा नाहर की ता. 29 मई को भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

0 पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 4 चेन्नई बिराज रहे हैं। मई के पश्चात् वे तिरूच्चिरापल्ली की ओर विहार करेंगे।

0 पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। लगभग मई के पश्चात् राजस्थान की ओर विहार करेंगे।

0 पू. महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 15 ने हुबली से ता. 6 मई को कोट्टूर की ओर विहार किया है। जहाँ उनकी निश्रा में दादावाडी की वर्षगांठ ज्येष्ठ सुदि 5 को दादा गुरुदेव भक्ति महोत्सव के साथ मनाई जायेगी।

0 पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 ने हुबली से सागर की ओर विहार किया है।

0 पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य वर्धमान तपाराधिका साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 फलोदी पधार गये हैं। वे लगभग एक महिना वहाँ पर बिराजेंगे।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं। बहिन म. ता. 5 को कैवल्यधाम पधारे हैं।

0 पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. ठाणा 4 ने चेन्नई से ता. 6 मई 2015 को बैंगलोर की ओर विहार किया है।

0 पू. महत्तरा श्री चंपा जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा चेन्नई में बिराज रहे हैं। अध्ययन आदि के लक्ष्य से वे चेन्नई के उपनगरों में विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा शंखेश्वर बिराज रहे हैं, जहाँ दीक्षा समारोह का आयोजन मई व जून में होगा।

0 पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 नारायणपुर बिराज रहे हैं।

0 पू. खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 चेन्नई बिराज रहे हैं। वे आगामी दो महिनों में चेन्नई के उपनगरों में विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म.सा. ;माताजीद्ध बाडमेर के आसपास क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं।

0 पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 ने आउफ प्रतिष्ठा के पश्चात् फलोदी होते हुए जैसलमेर की ओर विहार किया है।

0 पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 कोल्हापुर से पूना की ओर विहार कर रहे हैं। उनका चातुर्मास मुंबई में होगा।

0 पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 7 पार्श्वमणि तीर्थ पधार गये हैं। वे चार पांच दिनों की स्थिरता के पश्चात् सिंधनूर की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 अहमदाबाद दादा साहेब नां पगला नवरंगपुरा बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में शिविर का आयोजन किया गया है।

0 पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में पार्श्वमणि तीर्थ पर बच्चों के संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 250 से अधिक बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर का आयोजन उनकी प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा किया गया।

0 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में बिराज रहे हैं। वे 10 मई को कच्छ की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 कच्छ में विहार कर रहे हैं।

चातुर्मास निर्णय

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. ठाणा 6 रायपुर
पू. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा 2 बीकानेर
पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. 2 फलोदी
पू. प्रवर्तिनी श्री कीर्त्तिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4 बडौदा
पू. साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4 पालीताना
पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4 तिरूच्चिरापल्ली
पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. 8 शिवपुरी
पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि हॉस्पेट
पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि रतलाम
पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाणा 11 सोलापुर
पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ठाणा 4 बाडमेर

पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि रायपुर
पू. साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि बैंगलोर
पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि कटंगी
पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि चेन्नई धर्मनाथ मंदिर
पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि गांधीधाम
पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म. आदि सांचोर
पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि नागोर
पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि उदयपुर सूरजपोल दादावाडी
पू. साध्वी श्री विराग–विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि चेन्नई धोबीपेठ
पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. ठाणा 7 जालना
पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 3 तिरूपातूर
पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि जोधपुर
पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि मुंबई विल्सन स्ट्रीट
पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा चौहटन
पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा भुज
पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 4 अंजार कच्छ
पू. साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म. आदि इन्दौर
पू. साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म. ठाणा 3 मालेगांव
पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. ठाणा 3 शाजापुर
पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्रीजी म. ठाणा 4 बडी सिवनी

नगपुरा में वर्षीतप पारणा संपन्न

नगपुरा–दुर्ग की तपोभूमि श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ नगपुरा दुर्ग छ.ग. में 2 दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। युवाहृदय सम्राट प. पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभ सागरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन प्रभाविका पूज्य विदुषी साध्वी डॉ. श्री विद्युतप्रभाश्री जी बहन म. सा. की सुशिष्या पू. सा. डॉ. नीलांजनाश्री जी म.सा., पू. सा. दीप्तिप्रज्ञाश्री जी म. सा. 20 अप्रेल की सुबह श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ पध ाारे। आपश्री के धर्मलाभ संदेश के साथ ही परम्परागत तपस्या अनुमोदना का महोत्सव प्रारंभ हुआ। प्रथम दिवस पूज्य साध्वीजी म. सा. की निश्रा में अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध विधिकारक दिनेश भाई पारेख ने अपनी मण्डली के साथ लाभार्थी परिवार संघवी श्री मनरूपमलजी दुगड़ परिवार साजा दुर्ग, राजनांदगांव द्वारा आयोजित श्री वीतराग वन्दनार्थ भक्तामर महापूजन क रचना की। प्रथम दिवस भक्ति भावना के पश्चात् मुम्बई ;बिजोवाद्ध के सुप्रसिद्ध जैन कवि पत्रकार साहित्यकार एवं रंगकर्मी श्री युगराज जैन निर्देशित आलेखित हृदयस्पर्शी माता–पिता के त्याग पर आधरित बहुप्रशंसित ''माँ'' फिल्म का निःशुल्क प्रदर्शन किया गया। प्रतिष्ठित लेखक समाजसेवी युगराज जैन तपस्वियों के अनुमोदनार्थ तीर्थ आए थे। अपनी परम्परानुरूप अक्षय तृतीया ;अक्तीद्ध 21 अप्रेल के अवसर पर प्रातः तीर्थ आकर अंचलों के कृषको ने अपनी फसल की पहली बाली तथा विवाह पूर्व नवदम्पत्तियों ने तीर्थपतिश्री को तेल, हल्दी समर्पित कर अपनी आस्था प्रगट किए।

अक्षयतप तृतीया के दिन आयोजित धर्मसभा को संबोध्ति करते हुए प. पू. सा. श्री डॉ. नीलांजना श्री म. सा. ने कहा कि– अंतराय कर्म के उदय के परिणाम स्वरूप प्रथम तीर्थकर युगादिदेव श्री ऋषभदेव प्रभु को दीक्षा दिवस से लेकर अक्षयतृतीया तक प्रासुक आहार नही मिलने के कारण उपवास लेना पडा। अक्षयतृतीया के दिवस परमात्मा को उनके प्रपौत्र श्रेयांसकुमार ने इक्षुरस से पारणा कराया। पूज्य साध्वीजी म. सा. ने जैन धर्म

के साथ अन्य धर्म में अक्षयतृतीया की महत्वता को प्रतिपादित किया। तीर्थ के प्रमुख प्रवर श्री रावलमल जैन 'मणि' ने उपस्थित सभी तपस्वियों एवं तीर्थभक्तों का अभिनंदन किया।

अक्षय तृतीया के अवसर पर प्रथम तीर्थपति श्री ऋषभदेव प्रभु के वर्षीतप तपस्या के पारणा की परम्परा में वर्षीतप तपस्वी संघवी श्री मांगीलालजी दुगड के पौत्रवधू तथा तीर्थ के संस्थापक प्रमुख प्रवर श्री रावलमल जैन 'मणि' के पुत्रवधु श्रीमति संतोष संदीप दुगड़ दुर्ग, श्राविका विमलाबाई आबड़ मद्रास सहित अन्य तपस्वियों ने तीर्थपति श्री की भक्ति करते हुए पारणा किया।

तीर्थभक्त श्री विमलचंद मुथा कराड़, श्री सुखराज मेहता मुम्बई ने तपस्वियों का अभिनंदन किया। तीर्थ के संरक्षक संस्थापक श्री तिलोकचंद गोलछा, भीखमचंद कोठारी, ट्रस्टी पन्नालाल गोलछा, ज्ञानचंद कोठारी, सोनराज गोलछा, ज्ञानचंद बैद, कांतिलाल बुरड़, अमृत लोढा, महावीर कोठारी, संदीप निमाणी, नवीन जैन, राजेन्द्र गोलछा, ने पूज्य श्री को कांबली वोहराकर गुरूपूजन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री संदीप जैन 'मित्र' ने किया।

अक्षय तृतीया महोत्सव के अवसर पर मुम्बई, मद्रास, अहमदाबाद सहित छ. ग. अंचल के हजारों तीर्थभक्त उपस्थित थे।

हुबली दादावाडी में वर्षीतप पारणा संपन्न

श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी हुबली के तत्वावधन में वर्षीतप पारणा के उपलक्ष में रत्नत्रयी महोत्सव का आयोजन किया गया। दादावाडी प्रेरिका मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा. एवं स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में शिष्या साध्वी श्री मनोरमा श्रीजी एवं श्रेयनंदिता श्री के लगातार दूसरे वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष में दि 19.4.15 से 21.4.15 तीन दिवस का महोत्सव आयोजित किया गया। तपस्वी साध्वी के साथ साथ अन्य 13 तपस्वियों का भी पारणा दादावाडी में हुआ।

अक्षय तृतीया दिनाक 21.4.15 को वर्षीतप आराधक साध्वीजी के साथ साथ अन्य आराधकों संग वरघोडा का आयोजन किया गया। श्री शांतीनाथ मंदिर कंचगार गली से दादावाडी तक का वरघोडा निकाला गया। दादावाडी पहुँचने पर प्रवचन हॉल में धर्मसभा का आयोजन हुआ। श्री जिनकुशल महिला मंडल ने स्वागत गीतिका प्रस्तुत की तथा श्री जिनकुशल युवा मंच ने नाटय मंचन द्वारा वर्षीतप पारणा का महत्व समझाया।

इस अवसर पर हॉस्पेट–हुवीनहडगली– शिमोगा संघों की विनती को स्वीकार कर आगामी चातुर्मास की घोषणा की गई।

हुवीनहडगली से पधारे वर्षीतप स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी एवं आगामी चातुर्मास के सम्पूर्ण लाभार्थी श्री ललितजी छाजेड ने अपने संबोधन में कहा कि आज चातुर्मास की घोषणा से हमारे हृदय मे धर्म की धारा बहने लगी है और हम विश्वास दिलाते हैं कि चातुर्मास अत्यंत एवं पूर्ण सफलता तक पहुँचायेंगे।

शिमोगा संघ के अग्रणी श्री सुमेरमलजी छाजेड ने कहॉ कि अत्यंत गहन प्रयत्न के बाद चातुर्मास कराने का हमारा सपना साकार हुआ है अतः हम इस चातुर्मास को उतनी गहराई से लेते हुये अपने जीवन मे बदलाव लाने की कोशिश करेगे।

होसपेट संघ के अग्रणी ने संबोधन मे कहॉ कि मधुरभाषी ऐसी साध्वियों का चातुर्मास प्राप्त होना होसपेट संघ के लिये अत्यंत सौभाग्य की बात है।

सागर संघ ने प्रतिष्ठा पर पधारने हेतु साध्वीजी से विनती की। इस अवसर पर मुंबई, चैन्नई, इचलकरणजी, हैदराबाद, कोट्टुर, मुंडरगी, सांचोर, सोलापुर, वाणी, मेडिया, सूरत, बल्लारी, गंगाबती, गदग, बारडोली, बिजापुर, आदि विभिन्न संघों से बडी संख्या में भक्तगण पधरे थे।

कार्यक्रम का सुन्दर संचालन श्री जैन मरुधर संघ के सहकार्यदर्शा श्री दिनेशजी संघवी ने किया एवं कान्तिचंद टिमरेसा एवं प्रकाश छाजेड ने उसमे सहयोग किया। आभार अशोक छाजेड ने व्यक्त किया।